सफ़र की परेशानी

आज के दिनों में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ट्रेन में सफ़र नहीं किया हो और सफ़र के दौरान मुख़्तलिफ़ परेशानियों से दो चार न हुआ हो मसलन कुछ लोग सफ़र में कम्पार्टमेन्ट के अन्दर बीड़ी, सिगरेट और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बदबू से बहुत ज़्यादा वहशत ज़दा रहते हैं किसी को शिकायत है कि क्या मजाल जो उन्हें आज तक ट्रेन में ठीक से बैठने की जगह मिल गयी हो। कुछ बुज़ुर्ग या सन्जीदा क़िस्म के लोग बअज़ मुसाफ़िरों की ग़ैर सन्जीदा गुफ़्तगू या उनकी आपस में गाली गलौज क़िस्म के ग़ैर मेयारी मज़ाक़ से घबराते हैं। किसी को कम्पार्टमेन्ट के अन्दर मूँगफली या चने वालों की आवाज़ें गिराँ गुज़रती हैं और किसी को ख़्वाह-मख़्वाह बात करने वाले बुरे लगते हैं। तो किसी को ख़ामोशी एक आध लोग तो टिकट रखने के बावजूद भी काला कोट पहने टी-टी को देखकर ख़ाइफ़ हो जाते हैं। बहरहाल यह आम क़िस्म की शिकायतें हैं जिससे अक्सर बेशतर लोग दो चार रहते हैं। मुझे भी ट्रेन में सफ़र के दौरान एक परेशानी का अक्सर सामना करना पड़ता है। वह ज़रा मुख़्तलिफ़ क़िस्म की है और मेरे ख़याल में ऊपर बयान की गयी परेशानियों से कहीं ज़्यादा गम्भीर। आप लोग सोच रहे होंगे कि आख़िर वह कौन सी परेशानी है। जी हाँ मैं वही अर्ज़ कर रहा हूँ। वह यह कि मेरी आदत है की सफ़र के दौरान कुछ न कुछ पढ़ने का मसाला ज़रूर रख लेता हूँ। क्योंकि इन चीज़ों को सफ़र का बेहतरीन साथी समझता हूँ। और मेरा ख़याल है कि सफ़र के हमसफ़रों के साथ मग़ज़ मारी करने से कहीं अच्छा है कि आदमी कुछ न कुछ पढ़ता रहे। क्योंकि अगर आप पढ़ नहीं रहे हैं तो ख़ाली बैठ भी नहीं सकते। आपको दूसरे मुसाफ़िरों की बात में शामिल ही होना पड़ेगा। मसलन एक बार मैं सफ़र कर रहा था। जल्दी में पढ़ने का तो सामान ले नहीं पाया इसलिये अपनी आदत से मजबूर ख़ामोश बैठा हुआ था कि बग़ल में बैठे मुसाफ़िर ने बड़ी ज़ोर से मेरे कन्धों पर हाथ मारा और बोले कितनी महँगाई हो गयी है

गवरन्मेन्ट कुछ करती ही नहीं अब आप ही बताइये प्याज़ छः रुपया किलो बिक रही है बताइये कोई कैसे ख़रीदे यह कह कर उन्होंने फिर कन्धे पर हाथ जड़ दिया। मेरा क्योंकि कन्धे पर उनका हाथ खा-खा कर काफ़ी मूड ख़राब हो गया था। इसलिये मैंने गुस्से में कहा कि कहाँ मँहगाई है कहीं भी नहीं है मेरी तरफ़ तो प्याज़ दो रुपया किलो मिल रही है। इतना कहना था कि कम्पार्टमेन्ट के सारे मुसाफ़िर एक तरफ़ और मैं अकेला। अजी जनाब कहाँ की बात कर रहे हैं। किस शहर में आप रहते हैं जहाँ प्याज दो रुपया किलो है। मैंने कहा लखनऊ में रहता हूँ और आपको जितनी प्याज़ की ज़रूरत हो आइयेगा मैं दिलवा दूँगा। इस पर एक मिनहनी से साहब उछल कर ऐसे बोले जैसे मुझे कम्पार्टमेन्ट से फेंक ही देंगे और मिनमिना कर बोले अजी लखनऊ में तो मैं भी रहता हूँ दूरस्थ — गंज में। वहाँ तो दो रुपया किलो प्याज़ नहीं मिलती। वहाँ तो वही छः रुपया किलो में है। उनसे कहा अजी आप मेरे मोहल्ले में आइयेगा मैं आपको जितनी ज़रूरत होगी दो रुपया किलो मैं दिलवा दूँगा फिर आप अपने मोहल्ले में छः रुपया किलो बेचियेगा। अब वह मिनहनी साहब सन्जीदगी से मेरा पता और मोहल्ले का नाम अपनी डायरी में नोट करने लगे। शायद उनको अपने लखपति बनने के दिन क़रीब नज़र आने लगे होंगे। बहरहाल अभी वह मेरा पता ही नोट कर रहे थे कि एक लाला जी बोल पड़े। अजी आप तो सच समझ गये बाबूजी तो मज़ाक कर रहे होंगे। हम से ज़्यादा बाज़ार भाव कौन जाने, प्याज़ तो देश भर में छः रुपया सात रुपया किलो बिक रही है। मैंने भी सोचा अपनी जान छुड़ाओ और नक़ली ही ही कह कर मैं बोला जी हाँ मज़ाक कर रहा था। बहरहाल प्याज़ का मसअला ख़त्म हुआ। तो एक साहब बोले कल हमारे गाँव में बड़ी तगड़ी डकैती पड़ गयी लाखों का माल लुट गया और पुलिस डकैती के पूरे चार घन्टे बाद आयी। तो दूसरे साहब फ़ौरन बोल पड़े अरे, उन्हीं पुलिस वालों ने पहले डकैती डाली होगी और बाद में वर्दी पहन के आ गये होंगे। लाला जी भी कुछ काँपती हुई आवाज़ में बोले वैसे डाकुओं का आजकल ज़ोर बहुत हो गया है। तो मेरे बग़ल में बैठे साहब बोले

हाँ जब सुनो डकैती पड़ गयी है। माल लुट गया है और गवर्नमेन्ट कुछ करती हो नहीं और फिर हमारे कन्धे पर रसीद किया और बोले इसका कुछ उपाय होना चाहिये। मैंने सोचा अगर मैं कोई पुलिस वाला होता तो इन साहब को ज़रूर डकैती के केस में नपवा देता। ख़ैर मैंने कहा उपाये तो कुछ होना चाहिये और मैं डाकुओं से निपटने की दो चार तरकीबें बताने वाला भी था कि मेरे बिल्कुल सामने की सीट पर बैठा हुआ बड़ी-बड़ी मूंछों वाला आदमी बिल्कुल डाकू नज़र आया और मुझे लगा कि वह मुझे घूर रहा है। मैंने सोचा डाकुओं के ख़िलाफ़ कुछ भी मुँह से निकाला तो यह ज़रूर मुझे गोली मार देगा मैंने फ़ौरन बात का रुख बदला। अरे आप लोग तो डाकुओं के पीछे पड़ गये हैं। डाकू तो बहुत शरीफ़ होते हैं। वह तो हालात उन्हें डाकू बना देते हैं इतना कह कर मैं दाद तलब नज़रों से उस बड़ी-बड़ी मूँछों वाले को देखने लगा। लेकिन वह तो खिड़की के बाहर देख रहा था। मैंने सोचा ज़रूर किसी गाँव में डकैती का प्लान बना रहा होगा बहर हाल मेरे कहने का नतीजा यह निकला कि एक बार फिर सारा कम्पार्टमेन्ट एक तरफ़ था और मैं अकेला अब तो उनमें से कुछ मुझे किसी डाकू का दोस्त-या रिश्ते दार भी समझने लगे थे। इतने में टीटी साहब तशरीफ़ ले आये और एक तरफ़ से सबके टिकट-चेक करने लगे। सब ने टिकट दिखाया अब उस बड़ी मूँछों वाले की बारी आयी तो पता चला कि उसके पास टिकट नहीं है अब तो टीटी ने उसे खूब खिड़कियाँ दीं और और उसका गरेबान पकड़ कर सीट से खड़ा कर दिया। वह बेचारा थर-थर काँप रहा था। मैंने सोचा मैं तो उसे डाकू समझ रहा था और यह तो बिल्कुल चूहा निकला। ख़्वाह-मख़्वाह बड़ी-बड़ी मूँछों से डरा रहा। देखिये बात कहाँ से कहाँ पहुँच गयी। मैं अपनी उस परेशानी का ज़िक्र कर रहा था मुझे सफ़र में सबसे ज़्यादा तकलीफ़ वह लगती है। और वह यह कि मैं तो ढेर सारे अख़बार और रिसाले वग़ैरह लेकर कम्पार्टमेन्ट दाख़िल हूँ और थोड़ी देर में वह सारे कम्पार्टमेन्ट में बट जायें और मैं ख़ालीहाथ

बैठा रहूँ। मैं इससे ज़रा सा भी सुबालिग़ा से काम नहीं ले रहा हूँ। मेरे साथ अक्सर व बेशतर यही हुआ है। एक बार मुझे लखनऊ से शाहजहाँपुर जाना था सिर्फ़ तीन घन्टे का सफ़र होता है मैंने स्टेशन पर एक रिसाला ख़रीदा और सोचा यह तीन घन्टे इस एक मैगज़ीन के सहारे आसानी से कट जायेंगे।

मैं कम्पार्टमेन्ट में दाख़िल हुआ। सबसे पहले तो मैगज़ीन सीट पर रख दी कि जगह घेर ली जाये। फिर अपनी अटैची वग़ैरह सीट के नीचे रख दी। अब मैगज़ीन हाथ में लेकर सीट पर बैठ गया और गाड़ी चलने का इन्तिज़ार करने के सिलसिले में प्लेट फ़ार्म पर इधर-उधर नज़रें दौड़ाने लगा। सोचा गाड़ी चले तो फिर इत्मिनान से मैगज़ीन पढ़ी जाये। लीजिये ट्रेन ने प्लेट फ़ार्म से जैसे ही खिसकना शुरू किया मेरे बग़ल में बैठे साहब ने ज़रा एक मिनट कहकर मैगज़ीन मेरे हाथ से उचक ली मैंने सोचा कोई बात नहीं एक मिनट में वापस कर देंगे। अब वह उसका एक-एक पन्ना पलट कर उसमें छपे फोटो देखने लगे। और जहाँ इशतेहारात में मॉडल लड़कियों की तस्वीरें बनी होतीं वहाँ ज़रा देर तक देखकर पन्ना पलटते। मैंने सोचा सारा मैगज़ीन तो इशतेहारात से भरा रहता है। इस तरह से तो यह काफ़ी वक़्त ले लेंगे जी चाहा उनसे रिसाला वापस माँग लिया जाये। लेकिन मुरव्वत भी कोई चीज़ होती है मैं उनसे कुछ न कह सका चलो यह सिर्फ़ तस्वीरें देख रहे हैं। दस, पन्द्रह मिनट में सारी तस्वीरें देख ही डालेंगे। लेकिन सिर्फ़ तस्वीरें ही देखने में सन्डीला गुज़र गया। तस्वीरें तो उन्होंने देख डालीं थीं और अब किसी मज़मून पर तबई आज़माई कर रहे थे। अब मेरे सब्र का पैमाना भी लबरेज़ हो रहा था मैंने सोचा बहुत हो गयी मुरव्वत, अब उनसे रिसाला माँग ही लिया जाये फिर सोचा हो सकता है कोई बहुत ही दिलचस्प मज़मून पढ़ रहे हों इस लिये यह मज़मून उनको पढ़ ही लेने दिया जाये। अगर उसके बाद वापस कर देते हैं तो ठीक है नहीं तो दूसरा मज़मून शुरू करने से पहले ही मैं उनसे रिसाला छीन लूँगा लेकिन यह मेरी बेवक़ूफ़ी

थी | मैं यह भूल गया था कि वह रिसाला अंग्रेज़ी का था और सिर्फ़ एक पन्ना पलटने में उन्होंने आधा घन्टा लगा दिया था | बहरहाल जब उन्होंने मज़मून मुकम्मल करके मुझे रिसाला वापस किया तो हरदोई आ चुका था | जहाँ से शाहजहाँपुर का रास्ता सिर्फ़ आधे घन्टे का रह गया था | मेरे गुस्से के मारे सर में दर्द होने लगा था मैंने मैगज़ीन सीट पर रखा सोचा पहले एक प्याली चाय पी ली जाये फिर पढ़ा जाये और बाहर प्लेट फार्म पर चाय लेने उतर गया | जब चाय लेकर अन्दर दाख़िल हुआ तो देखा हमारी सीट पर तो एक देहाती साहब विराजमान हैं और सामने बैठे हुये एक दूसरे साहब मेरी मैगज़ीन के मुतालेआ में ग़र्क़ हैं | मैं ने उस देहाती से कहा यह तो हमारी सीट है तुम कैसे बैठ गये | तो वह बोला बाबू-जी यह तो खाली रही, मैंने कहा खाली कहाँ से रही, मैं इस पर अपनी किताब रखकर गया था | पता चला कि मैं जैसे ही रिसाला सीट पर रखकर बाहर प्लेट फार्म पर गया इस साहब ने रिसाला उठा ही लिया और वह देहाती बेचारा खाली सीट समझ कर बैठ गया | मैंने उन साहब से जो मेरे रिसाले के मुतालेआ में ग़र्क़ थे अर्ज़ किया कि जनाब जब आपने सीट से रिसाला उठा लिया था तो कम से कम इससे यहीं बता देते कि यह सीट घिरी हुई है | अब उन्होंने सर उठाकर मेरी तरफ़ देखा | फिर एक दम उन्हें बड़ी ज़ोर से गुस्सा आ गया | वह सीट पर से उठकर खड़े हो गये और एक दम देहाती को घसीट कर खड़ा कर दिया और मुझसे कहा बैठिये | वह देहाती भी शायद ज़रूरत से ज़्यादा शरीफ़ था चुपचाप खड़ा हो गया | वरना आजकल ऐसे देहाती कहाँ मिलते हैं अब वह दोबारह अपनी सीट पर बैठ कर हमारे रिसाले के मुतालेआ में मशगूल हो गये | मैं सीट पर बैठ चुका था अब मुझे इस देहाती पर अफ़सोस होने लगा जिससे उस की सीट छिन चुकी थी | बहरहाल मैंने यह किया कि थोड़ा सा सिसक कर उसे बैठने की जगह दे दी | और उसने इसका एहसान इस तरह उतारा की थोड़ी देर में बीड़ी सुलगा कर उसका धुआँ मेरे मुँह पर छोड़ने लगा | इन सब चक्करों में मेरी चाय बिलकुल ठन्डी बर्फ़ हो चुकी थी और मैंने बुलहक़ को चाय के साथ बाहर खिड़की से रवाना कर दिया |

अब मैं इन साहब को देख रहा था जो मुसलसल मेरा रिसाला पढ़े चले जा रहे थे अब तो मैं इनसे रिसाला माँग भी नहीं सकता था क्योंकि थोड़ी देर पहले उन्होंने मुझ पर एक एहसान किया था। मेरा मतलब मुझे मेरी ही सीट पर दोबारह क़ब्ज़ा दिलवाया था। बहर हाल रिसाला उन्होंने मुझे उस वक़्त थमाया जब गाड़ी शाहजहाँ पुर के प्लेट फ़ार्म पर दाख़िल हो रही थी। अब आप ही सोचिये मैं पूरे तीन घन्टे कितनी अज़ियतों से दो चार हुआ हूँगा। उस वक़्त मैंने सोच लिया था अब जब मैं ट्रेन में सफ़र करूँगा तो सीट पर बैठते ही रिसाला पढ़ना शुरू कर दूँगा तो किसी को मौक़ा ही नहीं मिलेगा रिसाला माँगने का और फिर मैंने यही किया। शाहजहाँ पुर से लौटते वक़्त बस आप समझ लीजिये की ट्रेन में तक़रीबन रिसाला पढ़ते ही हुये दाख़िल हुआ। और सीट पर बैठते ही पढ़ने में मुन्हमिक हो गया। बहर हाल तरकीब कारगर रही और मैं तक़रीबन दो घन्टे तक इस रिसाले को इनस्टाप पढ़ता रहा। बाक़ी मुसाफ़िरों में एक साहब सैक्स और अपराध पर कोई रिसाला पढ़ रहे थे। और कुछ सियासी मसअले पर ज़ोर शोर से बहेस कर रहे थे। मैंने सोचा इस वक़्त हालात बहुत साज़गार हैं सब मुसाफ़िर किसी न किसी चीज़ में मशग़ूल हैं और जो कुछ नहीं कर रहे हैं वह ऊँघ रहे हैं। इसलिये मैं दो चार मिनट का रेस्ट और एक आध जमाही ले सकता हूँ उसके बाद दोबारह रिसाला पढ़ना शुरू कर दूँगा। क्योंकि इस वक़्त कोई भी ऐसा नज़र नहीं आता जो मेरे रेस्ट के दरमियान मुझसे रिसाला माँग सकता है। लेकिन यह भी मेरी भूल थी। मैंने रिसाले के बाद एक ही जमाही ली थी कि वह साहब जो बहेस में कुछ दब रहे थे उन्होंने मेरा रिसाला उठाकर पढ़ना शुरू कर दिया। अब मेरे सामने इसके सिवा कोई और चारह नहीं था। कि मैं इन साहब की तरफ़ से बाक़ी बहेस में हिस्सा लूँ। बहरहाल लखनऊ पहुँचते पहुँचते मेरा सर गिन-गिन घूम रहा था। अब आप बताइये सारे रास्ते कौन नॉनस्टाप कैसे पढ़ सकता और अगर बीच में रुके तो उसका यह हश्र हो जो मेरा हुआ था। बहरहाल यह तरकीब तो कारगर ही थी कि रिसाला तक़रीबन पढ़ते

हुये ट्रेन में दाख़िल होना चाहिये इससे कम अज़्कम शुरू में तो कोई नहीं माँग सकता। अब उसके बाद से मैं वही करने लगा और तक़रीबन नॉनस्टाप चार-चार पाँच-पाँच घन्टे या जितना लम्बा सफ़र हो मैगज़ीन पढ़ता रहा। और तकान होने की बिल्कुल परवाह नहीं की क्योंकि यह तकान उस तकान से कहीं बेहतर है जो बाद में मुसाफ़िरों की गुफ़्तगू से हो। लेकिन एक बार इस तरकीब की वजह से काफ़ी शरमिन्दगी बल्कि ज़िल्लत उठानी पड़ी। हुआ यह कि कम्पार्टमेन्ट में दाख़िल हुआ और दूर ही से खिड़की की तरफ़ वाली अकेली ख़ाली सीट को देख लिया। अब मैंने रिसाला खोला पढ़ने के अन्दाज़ में मुँह के सामने किया और अन्दाज़े से वहाँ तक पहुँच कर जल्दी से उस सीट पर धड़ाम से बैठ गया। लेकिन दूसरे ही लम्हा उछलकर दूर जा गिरा। अब मैंने इस सीट की तरफ़ देखा तो उस पर एक ख़ातून बैठी हुई मुझे ख़ूँख़ार नज़रों से घूर रही थी। तो इसका मतलब यह हुआ कि जिस वक़्त मैंने ख़ाली सीट देखी और जितनी देर में रिसाला पढ़ता हुआ इस सीट तक पहुँचा यह ख़ातून उस पर बैठ चुकी थीं। वह बोलीं चश्मा तो इतने बड़े-बड़े लेन्स का लगाये हुये हो तब भी मैं इस सीट पर बैठी हुई नज़र नहीं आती मैं अब हकलाने लगा मैंने कहा जी-जी, वह ऐसा है कि ऐसा वैसा कुछ नहीं दूसरी सीट पर बैठे हुये एक साहब बोले हुलिया तो शरीफ़ों का बना रखा है और हरकत तो देखो। दूसरा बोला ऐसे को तो पुलिस के दे देना चाहिये। तीसरा जो एक पहेलवान टाइप का आदमी था बोला। अरे पुलिस को तो घूस देकर छुट जायेगा इस की तो मरम्मत होनी चाहिये। अब वह पहेलवान सीट से खड़ा हो गया था आस्तीन चढ़ाये मेरी तरफ़ घूर रहा था। तब वह ख़ातून बोल पड़ीं अरे छोड़िये जाने दीजिये मामला ख़त्म कीजिये। अच्छा आप कहती हैं तो छोड़ देते हैं। पहेलवान का ग़ुस्सा एक दम ठन्डा पड़ गया। मेरा तो शरमिन्दिगी के मारे इसक़दर बुरा हाल था कि जी चाह रहा था कि फ़ना हो जाऊँ। बहरहाल मामला रफ़ा-दफ़ा हो ही गया। और मैं मरे शरमिन्दिगी के इस ख़ातून को यह समझा भी नहीं सका कि मैं जान कर उन पर नहीं बैठा था। यह भी

अच्छा रहा कि इस खातून के साथ कोई था नहीं वरना ठुकाई पक्की थी। मैं भी वहीं अपने ऊपर लानत मलामत करता हुआ एक मुजरिम की तरह बैठ गया। अब कहाँ रिसाला वगैरह पढ़ने में दिल लगता दिमाग़ तो सोच-सोच कर रहा था। एक घन्टे का सफ़र गुज़र चुका था। सब लोग आपस में बात कर रहे थे। और मेरा मुकम्मल तौर पर सोशल बाइकाट था। इस एक घन्टे के दरमियान मैंने महसूस किया की वह कई बार मुझे देख चुकी है। और अब तो मेरी तरफ़ बार-बार देख रही थी। कोई और सिचवेशन होती तो शायद मैं भी एक आध बार मुस्कुरा कर देख लेता लेकिन उस वक़्त तो हालात बिल्कुल ही दूसरे थे। बहरहाल मैंने उसकी तरफ़ कनखियों से देखा तो वह मेरी ही तरफ़ देख रही थी। मैंने जल्दी से आँखें सीधी कर लीं। अब वह मुझसे मुख़ातिब थी माफ़ कीजियेगा। आप मशहूर दिलनवाज़ कौशिनी तो नहीं हैं। उनकी मैं तो ज़बरदस्त फैन हूँ। उनकी एक-एक ग़ज़ल मेरी डायरी में लिखी हुई है। मैंने कहा जी हाँ मोहतरमा आप ने सही पहचाना मैं ही दिलनवाज़ कौशिनी हूँ। तब वह बोली अरे तौबा तौबा इतने बड़े शायर और ऐसी हरकतें मैं आज ही घर जाकर डायरी फाड़ दूँगी। अब वह सीधी होकर खिड़की के बाहर देखने लगी थी। थोड़ी देर में मेरा स्टेशन आ गया था मैं अपना सामान उठाकर बाहर जाने लगा। वह फिर खा जाने वाली नज़रों से मुझे घूरने लगी। बहरहाल घर पहुँच कर मैंने खुदा का शुक्र अदा किया कि मैं सही सलामत आ गया और तौबा की कि कभी रिसाला पढ़ते हुये सीट पर नहीं बैठूँगा। लेकिन अब मेरा फिर वही हाल है ट्रेन में सफ़र करता हूँ तो मेरे सारे मैगज़ीन वगैरह तो आस पास बैठे हुये मुसाफ़िर पढ़ते रहते हैं और मैं बैठा कुढ़ता रहता हूँ।

०००